REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 6 | MARCH - 2023

"नवगीतगार गुलाब सिंह के नवगीतों का मूल्याकन"

डॉ. हरमन्दर सिंह
प्राचार्य , माता मोहन देवी बेदी कन्या महाविधालय अनुपगढ़. जिला श्री गंगानगर (राज.)

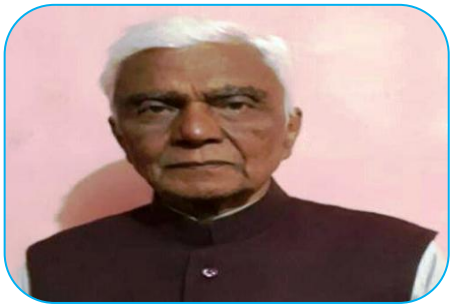

नवगीत भारतीय माटी से उपजा एक ऐसा कल्पवृक्ष है जिस पर शाश्वत एवं अम्लान सुमन खिलते रहे है ये नवनीत ओढ़ी, हुई नयी सभ्यता वाले शहरो से दूर कस्बों और गाव के परिवेश में उदभुत हुए है और अपनी सहज महक से परम्परा एवं आधुनिकता का सरोबार करते रहे है। आज नवगीत कारो कि एक प्रशस्य एवं लम्बी पंक्ति है। इस पंक्ति में अगृणी स्थान रखने वाले श्री गुलाब सिंह जी प्रयाग की धरती में तहसील भेजा के ग्राम बिगहनी में 5 जनवरी 1940 को अवतरित हुए।

प्रयाग की धरती सगंम की धरती है, जो गंगा यमुना और सरस्वती का मिलन स्थल है। इसकी माटी से ऐसी ऐसी विभूतियों का उदभव हुआ है, जिन्होने पुरषार्थ से देश को ऐसी राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया है, इनमें से बहुत से लोग ऐसे हुए है। जिन्होने नितांत ग्रामीण परिवेश से जुडे रहकर भी अपनी चंदनी शीतलता और सुर्गन्ध से दिग्दिगत को सुहासित किया है।

गुलाब सिंह जी क्षत्रीय वंश परम्परा में जन्म लेने वाले एक ऐसे रचनाकर है जो कर्मणा ब्राह्मण है। सारी उम्र शिक्षा और दीक्षा देने वाले गीतकार गुलाब सिंह आस्थावादी एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे।

गुलाब सिंह जी ने स्नातकोतर अध्ययन में अर्थशास्त्र एवं इतिहास विषय रखा था फिर भी उन्हे हिन्दी से गहरा लगाव रखा है इसलिए उन्होने अनेक कविता गीत नवगीत आदि के संग्रह लिखे है उनके अधिकांश ललित नवगीतो में जिस भाषा में वर्णन है। वह सहदय पाठक को ग्राम्यांचल परम्परा, सहजता और सहज जीवतंता से जोड़ता है। उदाहरणार्थ एक गीत प्रस्तुत है।

"नात नए अखुवन सग फूटे
डरियन सग्रन फरें
कुसुमित देह सुदिन रग राती
बगियन मे रस बदन बराती
दुर दुर नाइन धुप दुअरिया
चुन चुन चौक भरे।" (1)

एक लम्बी अवधि तक उतर प्रदेश के शिक्षा विभाग में अध्यापक प्राध्यापक और प्राचार्य पद को अपने दायित्व बोध ओर भाव सं सुशोभित करते हुए गुलाब सिंह जी अपने गांव अपनी जन्मभूमि में स्वतंत्र लेखन कर रहे है। उन्होने एक पत्र में लिखा है– सेवानिवृति के बाद पिछले दस वर्षो से अपने गांव बिगहनी में पैतृक आवास पर रहकर, अहा ग्राम्य जीवन क्या है संसद सदस्य दिल्ली के आवासी महाकवि की इस काल्पनिक 'अहा' में उन जैसा आनन्द ढुंढ रहा है और गृहस्थ जीवन के आकर्षक–विकर्षक के बीच स्वतन्त्र लेखन करते हुए पूर्ण विराम की घडी मक सक्रिय रहना चाहता हू। ईश्वर के प्रति कृतज्ञ हू कि अभी चल फिर रहा हू।

गुलाब सिंह जी जैसे लोकमेगल और लोकमन के मर्म स्पर्शी गीतकार के अब तक दो ही नवगीत संग्रह प्रकाशित हो सके है– 'धूल भरे पाव' तथा 'बास वन और बासुरी'। इसके अतरिक्त 'पानी में घेट' नामक उपन्यास भी छपकर चर्चित हो चुका है उनके

अप्रकाशित नवगीत संग्रहो में 'जडो से जुडे' (नवगीत सग्रह यंत्रस्थ) शब्द सहयात्री (नवगीम संग्रह) 'पत्थर पर गिर रहे पसीने' (नवगीत संग्रह) 'नवगीत तथा भारीयता' समीक्षा पुस्तक आदि।

उन्होने ग्राम्य जीवन को बहुत निकट से देखा है इसलिए उनके प्रथम नवगीत संग्रह 'धूल भरे पॉव' पहला गीत आग तो बचाना में उनका गीत मन बादल में निरोह काढ़ रहा है –

"टपरे का पोर–पोर टपके
ओ बादल!
आग यही जतनो से पाली है,
बाकी तो सारा घर खाली है।
गहराते अंधेरो में जाग जाग,
पडता है इसी को जलाना,
ओ बादल!
कोने की आग को बचना"1

उनका दूसरा बीत है 'सपने ओढे'। उनका तीसरा गीत सग्रह है – "गॉव मेरा"। बहुत पहले राष्ट्रीय स्तर की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका 'धर्मयुग' में यह गीत छाया था जिसमें आजादी के बाद भी गरीबी के अभिशाप को यथावत ढो रहे गॉव को प्रस्तुत किया गया हैं। चुनाव के बाद गाव पाच वर्ष तक लावारिस छोड दिए जाते है। गीतकार ने व्यग्य किया है–

"हर पाचवे साल प्रजातंत्र की सजावट है।
गाव मेरा लाठी और की कहावत है।"
एक गीत में गुलाब सिंह जी ने वाल्मीकीय संवेदना का परिचय दिया है–
"अनपेक्षित युद्ध/बिना किसी के प्रचारे
हारे हम/पानी से हारे।"

यह गीत 1978 में गंगा नदी में आई भयंकर बाढ़ मे परेशानी को दर्शोता है।

"कत्लगाह से हुए,
कछारो के घर मुकाम,
पशु पक्षी बूढे बच्चे
सबको कर तमाम।
उतरे जलवाहो के
जालिम हत्यारे।"

उनके घर के गीत नामक गीत मे खाद्यान की कमी से उत्पन्न झगडो का वर्णन किया गया है।

"गावो के फैले हाथो मे
ज्वार बाजरा बाट कर
धूप चढ रही फिर अंटो पर
सबके कन्नी काट करं।
बप्पा सिर पर हाथ रख लिए
मॉ बैठी मन भारे।"
बच्चे जैसे
"खुले महाजन के
खाते के पन्ने
बूढे लगते है

अद्धे और 4 बन्ने।
बहन
चौधरी की मर्जी सी
बिरादरी के टाट पर।"
श्री गुलाब सिंह का अगला गीत है 'सोच रहा गाव'।

'साझे की चिलम गई/गया भाईचारा

मना करे राह कोई/रोके
कुँआ–तारा'

उनके 'छोटी सी दिल्ली' नामक गीत मे अपने छोटे से गॉव को दिल्ली का प्रतीक बनाकर भारत के पागल लोकतन्त्र पर व्यंग्य किया है।

"बादल गयाढ़ब सारा, परिचय पहचान का,
तन बदला मन बदला, गाव घर सिवाना का,"

उनका "शब्दो के साथ" नामक गीत स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के झुठे सच को उजागर करता हुआ कहता है–

"कुछ भी तो साथ में नही
शब्दो के साथ के सिवा
इन्हे नही टोकना।"
"गुहराती थी नन्ही बिटिया
आ दादी
कैसी आजादी?" (1)

लगता है हर आदमी प्रश्न–वृक्ष वन गया है और हर चेहरा सवाल फिर भी गीतकार को आशा है–

"शायद भटके से
दिन लौटें
दिन के कहॉ दुकाल!"(1)

दो अनुभूतियॉ गीतकार गुलाब सिंह ने व्यक्त की है और ये उनकी दोनों ही अनुभूतियॉ देश के हर गम्भीर चिन्तक की अनुभूतियॉ है। पहल अनुभूति है–

"रूप गंध
श्रम भरी
हवाओ को क्या करे
ऑसू तक
हॅसने की
चावों का क्या करे ?
और
बिन हुए
वंसत गए कितने वांसती दिन।" (1)

दूसरी अनुभूति है।–

"फूलो से लदी हुई डालियाँ
छुओ नही
गंध लिखे ये बंसत
उनके है।"(2)

उनके दूसरे संग्रह का नाम है– बॉसवान और बाँसूरी। इसमे कुल 61 नवगीत है जो विभिन्न भाव बोध से सम्प्रक्त है। पहला गीत है "घाट से हटकर नहाना।" इसलिए वह कहते है।–

"जाल है भीतर नही के
घाट से हटकर नहाना।"

'सुख बाढ़' नामक गीत मे बाढ़ की भयावहता का कितना त्रासद चित्रण किया गया है व सियासी व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है–

"आई बाढ़ चढ़े पेड़ो पर
बॉधे खोट–खंटोले
सिर पर उड़े जहाज
पावॅ के नीचे अजगर डोले।" (1)

उनका संग्रह का अगला गीत है– 'कोठी पीछे कुआँ'। उदाहरण प्रस्तुत है।

"भाष्ण देकर भगी मोटरें
घर लौटे कतवारो
पीठ फेरकर चूल्हे से
डेहरी पर बैठी पारो
खेतों मे चूहों की मॉरें
खोद रहे है बच्चे,
गहरे दबी पंकी बाले सब
निकले डण्ठल कच्चे।" (1)

उनके 'दिन' नामक नवगीत में गरीब की व्वथा चित्रित होती है–
'सरसो के पीले प्रष्ठो पर,
हवा गीत गोविन्द लिखे,
रहकर मौन दर्द ठुहराते,
शीश झुकाए गॉव दिखे,
बजते है बॉसुरी सरीखे।
ऑसू से बहते है दिन। (1)

उनके 'अखबार जैसा दिन' गीत में बाढ़ का जल उतरने के बाद परिवेश में पसरे दुर्दिन को रेखांकित किया गया है–

"जडो की मिट्टी बहेगी

हमझुकगे और
कौन रोकेगा किनारो की
नियती का दौर।" (1)

उनके 'मत पूछो' नामक गीत की ढ़लान पर आई मनः स्थिति का चित्रण किया गया है–

"कहॉ गए सारे के सारे परिचित चेहरे,
आत्मीय भीगे तन
मुक्त हॅसी
मन गहरे ?"(1)

उनका 'शब्दों की शक्ति के लिए' गीत भोगे हुए यथार्थ के आधार पर जिन्दगी को अधुनातन उपमानो से व्याख्यायित करता है जैसे–

'जहर की कहा सुनी
अमृत की सनसनी
बस यही प्रतीत हुई जिन्दगी
बागों के कहकहे
आगों के अजदहे
पल पल विपरीत हुई जिन्दगी
संबंधो के सिरे
अभिनव की प्रीत हुई जिन्दगी।' (1)

उनके 'तिनको की बसात' नवगीत के माध्यम से एक सामान्य जन के जीवन भर ढोई जा रही विवशताओ को पूरी संवेदना के साथ व्यक्त किया गया है–

"कभी नही यो हॅसे/कि खुशियों के हो लेते,
इस तरह नही मिले/कि अपने को खो देते।"
कौन सुने तिनको की
क्या बिसात होती! (2)

उनका 'झीनी चाडर' नामक नवगीत वर्षान्त के गाम्रीण परिवेश को प्रस्तुत करता है–

"फूली कास हिले सभालों सी दे रही विदाई
पवास गई ताल में खोई, सुरधुन की परछाई
गीली मिट्टी पकी
बरेजो मे गहराये पाना!" (1)
उनका 'पूरी आजादी' एक ऐसा व्यग्य गीत है जिसमे आजादी के बाद की यथार्थ स्थिति का चित्रण किया गया है–

"खुले नर्सरी कान्वेन्ट
दुहराते ए बी सी डी
राम खेलवान के घर खेले
बेबी डेजी स्वीटी
चित्रहार के लिए ढुँढते

चश्मे दादा दादी।" (1)

उनका 'गॉव का आसमान' नामक गीत बहुत ही साथर्क और संदर्भित है। यथा –

आमो मे सरसई लगेगी, महुए फूलेगे,
गॉव से होकर आना, हम तुमको छू लेगे।
एक आँख से फूली सरसो, इजी मे गलियारे,
मनमे लाना भरी गोद मुस्काराते मौन इशोरे।
परछाई छूकर आना हम तुमको छु लेगे। (1)

'फागुन' नामक गीत में फागुन का वर्णन है–
"हरे खेत मे बगुलों जैसे,
आसमान मे बादल!"

उनका 'चौराहे का विज्ञापन' एक ऐसा गीत है जो कागज पर छपे विज्ञापन और उसकी यथार्थता को बडी बरीकी से उजागर करता है–

"सिर पर पकी फसल का गट्ठर
बिंदिया दीपित भाल
हाथ हरापन लिए साथ!"
धरती ने सोना उगला
आसमान ने बरसे मोती
ये मुँह बोले चित्र कह रहे
देखो हमे खुशी क्या होती?
खुशियो के आरोपण
चाहे जिसको करे निहाल।" (1)

उनके सग्रह के 'देश अपना है अनोखा' नामक गीत मे किसनो की व्यथा को इस तरह व्यक्त किया है–

"फसल कम खूशियॉ ज्यादा,
है किसानो मे।"

श्री गुलाब सिंह जी के 'बदली परिभाषायें' नामक गीत मे कथित नयापन तथा प्रगतिशील परिवेश का चित्रण किया गया है–

"समय आ गया लेकर,
बदली बदली परिभाषायें
हमें चाहिए बढ़कर
उनको ओढ़े और बिछायें।
पैसे पर बिककर
पैसे को गाली देना सीखे
तोडे सच से सरेकार
पर हंरिचन्द्र से दिखे

रोने वालो के संग रोये
खुशहालो संग गायें।"

उनके'सुगन्धित सोना' नामक गीत में नयी पीढ़ी के लिए शुभकामनाएँ दी गई है–

"वंध्यापन का बोझ न ढ़ोये,
उगे नये अंखुए!

नवगीत की अग्रिम पंक्ति के प्रथम पुरूष गुलाब सिंह जी एक ऐसे रचनाकार है, जिन्होने नवगीत की स्वायतता को जनबोध और जनसंस्कृति तक ले जाने का कार्य किया है। उनकी रचनाधर्मिता के पीछे लोकमंगल का संकल्प है और जिस लोक की बात प्रकतिवादी युग से लेकर आज तक के तथाकथित लोग करते आ रहे है, और जिस लोक का लोगो ने अपनी कविता का फैशन बना लिया है, उन सबसे हटकर गुलाब सिंह जी ने सच्चे अर्थो मे उन ग्राम्यजनो को अपने नवगीतो में प्रतिष्ठित किया है जो लोक संज्ञा के यथोचित पात्र है।

गॉव का जो विस्तृत कैनवास इन्होने प्रस्तुत किया है, उसमें ग्राम्य जिन्दगी के सभी चेहरे बड़ी स्पष्टता के साथ देखे जा सकते है। कविता के समीक्षक डॉ. भवदेव पाण्डेय ने इनके प्रथम नवगीत संग्रह 'धूल भरे पॉव' के सम्बन्ध में ठीक ही कहा है– "गीतो को गॉव बना देने और गॉव को गीत बना देने की अद्भुत कथा गुलाब सिंह में है।" (1)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ का नाम	लेखक का नाम	प्रकाशन
मूल ग्रन्थ (काव्य सग्रंह)		
1 धूल भरे पॉव	गुलाब सिंह	संजय बुक सेन्टर गोलघर वाराणसी प्रथम संस्करण 1992
2 बॉस वन और बॉसुरी	गुलाब सिंह	अल्पना प्रकाशन 180/28 ए पुराना अल्लापुर, ईलाहाबाद प्रथम संस्करणः 2002
सन्दर्भ ग्रन्थ		
1 नवगीत का उद्भव और विकास	गुलाब सिंह	हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ़
2 नवगीतःविविध सन्दर्भ	देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र'	अनुभव प्रकाशन ई 28 लाजपत नगर साहिबाबाद
3 गीतांगिनी	राजेन्द्र प्रसाद सिंह	मधुरिमा साहित्य प्रकाशन मुज्जफरपुर, बिहार
4 अलगाव का द्वष्टि से नवगीत का अध्ययन	डॉ0 रघुनाथ जैन	कात्यायन प्रकाशन 172/8 ए डॉ. बी.ए. वर्मा रोड़ लखनऊ
5 महादेवी के श्रेष्ठ गीत	सं. गंगाप्रसाद पाण्डेय	किताबघर अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली

6 नए गीत का उद्भव और विकास	रमेश रंजक	पुस्तकायन 2/4240 अंसारी रोड़, नई दिल्ली
7 गीति काव्य स्वरूप विवेचन	डॉ0 जयनाथ ललिन	मोनाक्षी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली
8 नई कविता	डॉ जयनाथ गुप्त	लोकभारती प्रकाशन ठलाहाबाद
9 नवगीत दशक–एक	डॉ0 शम्भुनाथ सिंह	पराग प्रकाशन दिल्ली
10 नवगीत दशक–दो	डॉ0 शम्भुनाथ सिंह	पराग प्रकाशन दिल्ली
11 नवगीत अर्द्वशती	डॉ0 शम्भुनाथ सिंह	पराग प्रकाशन दिल्ली
12 नवगीत एकादश	डॉ0 भारतेन्दु मिश्र	अमन प्रकाशन नई दिल्ली